eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

बुनकरों के जीवन–यापन के बदलते माध्यमः एक वैयक्तिक अध्ययन

(उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

[1]मोहम्मद नदीम

[2]डॉ. रुपेश कुमार सिंह

[1]पी–एच.डी. शोध छात्र (समाज कार्य), समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं समाज कार्य विभाग, डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ–226017

[2]सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, समाज कार्य एवं समाज विज्ञान विभाग, डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ–226017

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

वर्तमान सदी एक ऐसी सदी है जिसने समाज के विभिन्न वर्गों के लिए जीवन यापन के अपार अवसर एवं सम्भावनाएं प्रदान की हैं। जिसके कारण भारतीय समाज के विभिन्न जातियों, समुदायों एवं वर्गों ने अपने परंपरागत जीवन यापन के साधनों को त्यागते हुए नये क्षेत्रों में प्रवेश किया है। उक्त समुदायों में से भारतीय समाज का एक ऐसा समुदाय जिसका सदियों से जीवन यापन का परंपरागत माध्यम बुनाई व्यवसाय था। लेकिन वर्तमान समय में यह समुदाय सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, उत्पादन, विपणन सम्बन्धी समस्याओं के कारण अपने पीढ़ीगत व्यवसाय को छोड़ने के लिए विवश है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन एक गुणात्मक अध्ययन है जिसमें उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जनपद के जलालपुर तहसील के बाजिदपुर मुहल्ले में निवास करने वाले चार वैयक्तिक अध्ययनों के द्वारा बुनकरों के जीवन यापन के बदलते माध्यम का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दावली– बुनकर, बुनाई व्यवसाय, हथकरघा, पावरलूम, जीवन–यापन

प्रस्तावनाः

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस देश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यह जनसंख्या अपने जीवन यापन हेतु कृषि या कृषि से सम्बन्धित लघु एवं कुटीर उद्योगों पर आधारित है। इसमें एक महत्वपूर्ण व्यवसाय बुनाई है जो ग्रामीण एवं अर्द्ध–शहरी क्षेत्रो में निवासरत

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

निम्न सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर के लाखों लोगों के जीवन यापन का सदियों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष साधन रहा है और इस व्यवसाय में संलग्न लोग बुनकर कहलाए। प्रारम्भ में यह व्यवसाय (बुनाई का कार्य) हथकरघा द्वारा परंपरागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी किया जाता रहा है। परन्तु औद्योगीकरण एवं मशीनीकरण के आने से बुनाई व्यवसाय का भी मशीनीकरण हुआ और स्वचालित/बिजली करघा या पावरलूम ने इस क्षेत्र में दस्तक दी। पावरलूम की विशेषता यह रही कि इसने कम मानवीय श्रम में अधिक माल का उत्पादन किया जिससे परम्परागत रूप से हथकरघा से वस्त्र का उत्पादन कर रहे बुनकरों ने तेजी पावरलूम को अपने जीवन यापन के माध्यम के रूप में अपनाया। परन्तु 90 के दशक में उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमण्डलीकरण (एल.पी.जी.) की शुरूआत हुई जो मुख्यतः आर्थिक सुधारों से सम्बंधित थी। उक्त प्रक्रियाओं के कारण भारत की आयात–निर्यात नीति में परिवर्तन हुआ और इससे भारत में सस्ते विदेशी ब्राण्डों का आगमन हुआ। जिसके पश्चात भारत के स्थानीय बाजारों में हथकरघा एवं पावरलूम के उत्पादों के प्रति लोगों की रूचि कम होने लगी और सस्ते विदेशी उत्पादों के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ा। हथकरघा एवं पावरलूम उत्पादों के बाजार में घटती मांग तथा उत्पादों में नवाचार की कमी होने के कारण बुनाई व्यवसाय एवं इस कार्य में संलग्न बुनकर बुरी तरह प्रभावित हुए।

वर्तमान समय में बुनाई व्यवसाय से सम्बन्धित कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि एवं अस्थिरता, बिजली दर महंगा होना, उत्पादित माल की मांग एवं विक्रय में कमी, नवाचार का अभाव आदि कारकों ने बुनकर समाज को अपने परंपरागत व्यवसाय को छाड़ने के लिए विवश किया है तथा यह वर्ग सदियों से लिप्त अपने परंपरागत जीवन–यापन को छोड़कर नये साधनों को तलाश रहे हैं, जिससे वह अपना व अपने परिवार के सदस्यों का सही तरीके से भरण–पोषण कर सकें। प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे कौन से कारक उत्तरदायी हैं जिसके कारण आज बुनकर समुदाय अपने जीवन के पीढ़ी दर पीढ़ी से चले आ रहे जीवन यापन के माध्यमों को बदलना चाहते हैं। उक्त कारकों का पता लगाने से पहले उचित होगा कि बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं जीवन यापन से सम्बंधित पूर्व शोध अध्ययनों की समीक्षा की जाए।

सम्बंधित साहित्य की समीक्षाः

बनर्जी, सुबराता एवं मुजीब (2014) ने हथकरघा बुनकरों की स्थिति एवं उनके प्रवजन पर एक अध्ययन सम्पन्न किया, जिसमें पाया गया कि साम्प्रदायिक हिंसा की आशंका, कच्चे माल की कीमत

में वृद्धि, सरकारी ऋण की अनुपलब्धता, अपर्याप्त परिवहन सुविधा, भारत में अच्छी सुविधा तथा सुरक्षा का अभाव यह प्रमुख कारण हैं, जिससे बांग्लादेश का बुनकर भारत में अपनी आजीविका के लिए प्रवजन कर रहा है। शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया कि सरकार बुनकरों को उपयुक्त सुरक्षा एवं सुविधा प्रदान करे जिससे इनका प्रवजन रूक सके।

समीरा एवं संजीव (2015) ने उड़ीसा के कटक जिले में ''प्रोफिटेबिलिटी एनालिसिस ऑफ हैण्डलूम वीवर्सः ए केस स्टडी'' पर विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन में पाया कि उड़ीसा के हथकरघा उत्पाद की लाभप्रदता एवं आय में महत्वपूर्ण अन्तर है। इनके अनुसार मास्टर बुनकर एवं स्वतन्त्र बुनकर को हथकरघा के उन उत्पादों में निवेश करना चाहिए जो उनको अधिक लाभ दे सके। शोधकर्ताओं ने अपने सुझाव में कहा कि हथकरघा उद्योग को और बेहतर बनाने के लिए प्रचार–प्रसार, प्रदर्शनी, नई डिजाइन की जागरूकता, कम दाम में कच्चा माल, उचित मार्केटिंग, मशीनें उपलब्ध कराने तथा बिचौलियों को समाप्त करने की आवश्यकता है।

कौशिक एवं जैन (2015) ने विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे–धागा पूर्ति योजना, एकीकृत हथकरघा विकास योजना, मार्केटिंग एवं निर्यात प्रमोशन योजना, स्वास्थ्य इंश्यारेन्स योजना तथा महात्मा गांधी बुनकर योजना आदि का मध्य प्रदेश के खरगोन जिले के महेश्वर के बुनकरों पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन में पाया कि लगभग एक चौथाई बुनकरों को इन योजनाओं के बारे में कोई जानकारी ही नहीं थी, वहीं कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी रखने वाले बुनकरों में शैक्षिक स्तरवार पर्याप्त भिन्नता भी थी, जबकि लाभान्वित होने की स्थिति और राजनीतिक या गैर–सरकारी संगठनों की निकटता में धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

तनुश्री (2015) ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के हथकरघा बुनकरों की विभिन्न समस्याओं के अध्ययन में वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया तथा इसके अन्तर्गत चयनित बुनकरों से साक्षात्कार अनुसूची द्वारा उनके व्यवसाय में हो रही समस्याओं से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन कर उनका विश्लेषण किया गया। साथ ही उन्होंने अध्ययन में पाया कि औद्योगीकरण के कारण बनारस के बुनकरों ने इस प्रतिष्ठित एवं परम्परागत उद्योग को खो दिया है।

बारी, मुनीर एवं खान (2015) ने अपने अध्ययन में उत्तर प्रदेश के संत कबीरनगर जनपद में हथकरघा श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के विश्लेषण में पाया कि दो–तिहाई (69 प्रतिशत) से भी अधिक हथकरघा श्रमिकों की मासिक आय निम्न स्तरीय किन्तु दिहाड़ी मजदूरों से अधिक थी।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

73 प्रतिशत हथकरघा मजदूरों का कहना था कि अपनी आय से वे परिवार का खर्च उठाने में सक्षम हैं, लेकिन रोजगार संवृद्धि में सरकार की ओर से कोई आर्थिक एवं तकनीकी सहायता न मिल पाने के कारण उनकी आय में वृद्धि नहीं हो रही है, फिर भी 70 प्रतिशत हथकरघा श्रमिक अपनी वर्तमान व्यवसायिक स्थिति से संतुष्ट थे।

सुल्तान एवं मेहरुन्निसा (2016) ने उत्तर प्रदेश के मऊ शहर में संचालित शक्ति–चालित करघों में कार्यरत बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषण में पाया कि मऊ के शक्ति–चालित करघों की निम्न उत्पादकता के कारण इनमें कार्यरत बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि शक्ति–चालित करघों की निम्न उत्पादकता के लिए कार्यशील पूँजी की कमी, अशिक्षा, प्रशासनिक–व्यावसायिक जानकारी की कमी, अपर्याप्त विद्युत आपूर्ति आदि कारक ज़िम्मेदार हैं।

उपरोक्त शोध अध्ययनों एवं सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि बुनकर समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित भारत एवं पड़ोसी देशो में पर्याप्त अध्ययन सम्पादित किये गये हैं इसके अतिरिक्त बुनकर समुदाय की उत्पादन, विपणन, सहकारी समितियों, सरकारी योजनाओं के प्रभाव आदि से सम्बंधित भी अध्ययन हुए हैं परन्तु उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर जिले में बुनकर समुदाय के जीवन यापन के बदलते माध्यम से सम्बन्धित अध्ययनों का अभाव है। इसलिए उक्त शोध अध्ययन की आवश्यकता है जिससे अम्बेडकरनगर जनपद में निवासरत बुनकरों के कल्याण से सम्बन्धित प्रभावी कदम उठाये जा सकें।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का पता लगाना।
2. बुनकर समुदाय के जीवन–यापन के बदलते माध्यम का अध्ययन करना।

शोध विधि तन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के अम्बेडकरनगर के जलालपुर तहसील के बुनकर बाहुल्य बाजिदपुर मुहल्ले में सम्पादित किया गया है। यह मुहल्ला नगर पालिका परिषद क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। उक्त मुहल्ले की जनसंख्या लगभग दो हजार है, जिसमें मुस्लिम धर्म के अधिसंख्य अंसारी समुदाय के लोग निवास करते है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

प्रस्तुत अध्ययन एक वैयक्तिक अध्ययन है जिसके अन्तर्गत बाजिदपुर मुहल्ले में निवासरत चार बुनकरों से ंगुणात्मक आंकड़ों को साक्षात्कार, अवलोकन, समूह चर्चा आदि के माध्यम से एकत्रित किया गया है। साथ ही एकत्रित प्राथमिक गुणात्मक आंकड़ों को द्वितीयक स्रातों के आलोक में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

वैयक्तिक अध्ययन–1

अम्बेडकरनगर जिले के तहसील व नगर पालिका परिषद जलालपुर के बाजिदपुर मुहल्ले के अंसारी वर्ग के 40 वर्षीय अखलाख अहमद (परिवर्तित नाम) के संयुक्त परिवार में पांच भाई, दो बहने एवं माता–पिता हैं तथा यह अपने परिवार में सबसे छोटे हैं। इनके यहां कई पीढ़ियों से कपड़ा बुनाई कार्य किया जाता रहा है। इन्होंने बताया कि इनके पूर्वज कपड़ा बुनाई का कार्य हथकरघा के माध्यम से किया करते थे जो उनके जीवन यापन का मुख्य साधन था। इनके पिता ने भी कुछ समय तक हथकरघा पर बुनाई कार्य किया था। परन्तु पावरलूम के आने के पश्चात इनके परिवार ने हथकरघा छोड़कर बुनाई का कार्य पावरलूम द्वारा करने लगे। पहले यह स्वतन्त्र बुनकर थे परन्तु व्यवसाय में घाटा होने के कारण इन्होंने बानी बुनकर के रूप में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु कम पारिश्रमिक एवं पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण इनके परिवार ने धीरे धीरे बुनाई के व्यवसाय को छोड़ दिया। इसी दौरान अखलाक अहमद ने अपनी शिक्षा जारी रखा तथा एम.ए. व तकनीकी शिक्षा ग्रहण करके धनार्जन हेतु सऊदी अरब चले गये। लगभग 6 साल बाहर रहते हुए इन्होंने अपने भाई के दो बेटों को भी अपने पास बुला लिया। जिससे इनकी और इनके परिवार के लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। वर्तमान में यह अपने गृह नगर में ही रह कर अपना स्वयं का व्यवसाय (सिविल इन्जीनियरिंग) का कार्य कर रहे हैं। उक्त वैयक्तिक अध्ययन से स्पष्ट है कि पीढ़ी गत व्यवसाय से जीवन यापन में आने वाली कठिनाइयो के आने के कारण ही नई पीढ़ी के लोग शिक्षा ग्रहण कर अपने अच्छे जीवन यापन के लिए अन्य क्षेत्रों की ओर उन्मुख हो रहे हैं।

वैयक्तिक अध्ययन–2

शकील अहमद (परिवर्तित नाम) बाजिपुर के अंसारी वर्ग से सम्बन्धित हैं, इनकी आयु लगभग 50 वर्ष है। यह संयुक्त परिवार में रहते है। इन्होने प्राथमिक स्तर तक शिक्षा ग्रहण किया है। बुनाई का व्यवसाय इनके परिवार का कई पीढ़ियों का परम्परागत व्यवसाय है जो इनको विरासत में मिला। इनके यहां पीढ़ियों से हथकरघा पर बुनाई का कार्य किया जाता रहा है। शकील अहमद भी हथकरघा

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

पर ही बुनाई का काम करते रहे हैं। शकील अहमद बताते है कि हथकरघा बुनाई के माध्यम से वह अपने परिवार का खर्च चलाते थे और संतुष्ट भी थे। उन्होंने यह भी बताया कि उनके पास दो करघा थे जिस पर परिवार के सभी सदस्य मिलकर समय समय पर कार्य करते थे। परन्तु पावरलूम आने के बाद उनके पास इतनी पूंजी नहीं थी कि वह पावरलूम को खरीद सकें। परिणाम स्वरूप इन्होंने हथकरघा पर ही अपनी परंपरागत बुनाई के कार्य को जारी रखा। इन्होंने बताया कि पावरलूम में कम मानवीय श्रम एवं कम लागत में अधिक उत्पादन होने के कारण बाजार में उत्पाद कम दाम पर उपलब्ध होने लगा। जिसके कारण हथकरघा द्वारा उत्पादित माल की बाजार में मांग कम हुई। अन्ततः शकील अहमद को पीढ़ियों से चले आ रहे परंपरागत बुनाई व्यवसाय को छोड़कर मजदूरी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। वर्तमान में शकील अहमद ठेलिया चलाकर सामान ढुलाई का कार्य कर रहे हैं जिसके माध्यम से इनके परिवार का भरण–पोषण हो रहा है।

वैयक्तिक अध्ययन–3

बाजिदपुर मुहल्ले के रहने वाले 45 वर्षीय नजीब अहमद (परिवर्तित नाम) अन्य पिछड़ा वर्ग के मंसूरी समुदाय से आते है। इनके परिवार में तीन पुत्र व दो पुत्रियां एवं माता–पिता है। इन्होने तीसरी कक्षा तक पढ़ायी पूर्ण की है। इनके पिता मजदूरी का कार्य करते थे। इनका पीढ़ीगत व्यवसाय बुनाई नहीं था परन्तु बुनकर बाहुल्य मुहल्ले में रहने के कारण इन्होंने बुनाई का कार्य सीखा और बुनाई का कार्य करने लगे। नजीब अहमद ने बताया कि इन्होंने जब बुनाई का कार्य प्रारम्भ किया था तो इनको साप्ताहिक पारिश्रमिक मिलता था और इससे परिवार का खर्च चल जाया करता था परन्तु धीरे धीरे महंगाई बढ़ती गयी लेकिन पारिश्रमिक में कुछ खास बढ़ोत्तरी नहीं हुई जिसके कारण उनका एव उनके परिवार का भरण पोषण ठीक से नहीं हो पाता था एवं वह अपने बच्चे की शिक्षा पर ध्यान नही दे पाते थे जिसके कारण उन्होने बुनाई का कार्य छोड़ दिया। वर्तमान में नजीब अहमद मासिक वेतन के आधार पर कपड़े के शो रूप में कार्य रहे है जिससे वह अपना एवं अपने परिवार का जीवन यापन संतोषपूर्ण तरीके से कर रहे हैं।

वैयक्तिक अध्ययन–4

48 वर्षीय राम जतन (परिवर्तित नाम) जो अनुसूचित जाति से सम्बन्धित हैं और इस मुहल्ले के रहने वाले हैं। इनके माता–पिता का स्वर्गवास हो गया है। यह संयुक्त परिवार में रहते हैं। इनके परिवार में कुल 10 सदस्य हैं। इनके पिता भी श्रमिक बुनकर के रूप में कार्य करते थे। राम जतन

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

के दो भाई है वह भी बुनाई का ही कार्य करते थे। राम जतन ने बताया कि उनके एवं उनके परिवार के जीवन यापन का मुख्य साधन बुनाई ही था परन्तु वर्तमान में कम मजदूरी मिलने के कारण यह अपने परिवार का खर्च पूरा नहीं कर पाते थे जिसके कारण इन्होंने अपने पूर्व व्यवसाय को छोड़ दिया है। वर्तमान में राम जतन एवं उनके परिवार के पुरूष दिहाड़ी मजदूरी करने लगे हैं।

निष्कर्षः

उक्त वैयक्तिक अध्ययनों एवं सम्बन्धित साहित्य समीक्षा के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में बुनाई व्यवसाय से सम्बंधित विभिन्न कारकों जैसे कच्चे माल के दामों व बिजली दरों में वृद्धि, लाभ एवं आय में कमी, व्यवसाय में मंदी, स्थानीय बाजारों में हथकरघा एवं पावरलूम उत्पादों के प्रति अरूचि, विदेशी एवं ब्राण्डेड सस्ते उत्पादों के प्रति लोगों का आकर्षण तथा सरकार एवं सहकारी समितियो का बुनकरों के प्रति उदासीन रवैया आदि ने बुनकर समुदाय के पीढ़ीगत कार्य को बुरी तरह से प्रभावित किया है। जिससे यह वर्ग अपने परिवार का भरण पोषण आसानी से नहीं कर पा रहा है। ऐसी स्थिति में वर्तमान बुनकर समुदाय दोराहे पर खड़ा है जिसमें एक तरफ जीवन यापन का परंपरागत व्यवसाय है जिससे वह अपनी व अपने परिवार की आवश्यकताओ की पूर्ति नहीं कर पा रहा है और दूसरी तरफ इस समुदाय को अपने जीवन यापन के दूसरे माध्यमों को तलाशने एवं अपनाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में अध्ययन क्षेत्र के निवासरत बुनकर समुदाय ने अपने जीवन यापन के माध्यमों को भारी मन से परिवर्तित करना प्रारम्भ कर दिया है और यह वर्ग वर्तमान समय में नये जीवन यापन के साधनों के रूप में स्वरोजगार, नौकरी (सरकारी एवं प्राइवेट), दिहाड़ी मजदूरी, रोजगार व अधिक धनार्जन हेतु देश के बाहर प्रवजन आदि को अपना रहे हैं। इस कारण से यह वर्ग अपने पूर्व जीवन यापन के माध्यमों की अपेक्षा वर्तमान माध्यमो से संतुष्ट हैं और समाज में अपनी एक अलग पहचान स्थापित कर रहे हैं।

सन्दर्भः

1. सिंह, आर0जी0 (2014), *''सामाजिक अनुसंधान पद्धतियां'',* मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल.
2. आहूजा, राम (2010), *''सामाजिक अनुसंधान'',* रावत पब्लिकेशन, जयपुर.
3. विस्मिल्लाह, अब्दुल (2014), *''झीनी झीनी बीनी चदरिया'',* राज कमल प्रकाशन प्रा0लि0, नई दिल्ली.

4. बनर्जी, सब्रता, मुजीब, मो0 मुनीरूज्जमा एवं शर्मीन शुमोना (2014), ''स्टेटस आफ हैण्डलूम वर्कर्स एण्ड काजेज आफ दियर माइग्रेशन : ए स्टडी इन हैण्डलूम इण्डस्ट्री आफ तंगेल डिस्ट्रिक्ट, बांग्लादेश'', *रिसर्च आफ ह्युमनिटीज एण्ड सोशल साइंस*, वा0–4, न0–22, पृ0 157–162.
5. पात्रा, समीरा एवं कुमार, संजीब डे, (2015), ''प्रोफिटेबिलिटी एनालिससि ऑफ हैण्डलूम वीवर्सः ए केस स्टडी'', *अभिनव नेशनल मन्थली रिफर्ड जर्नल ऑफ रिसर्च इन कामर्स एण्ड मैनेजमेण्ट*, वा0–4, इश्यु–8, अगस्त, पृ0 11–19.
6. कौशिक, निखिल एवं जैन डा0 मधुराज (2015), '' इम्पैक्ट आफ गवर्नमेण्ट स्कीम आन हैण्डलूम वीवर्स ऐट माहेश्वर, एम0पी0'', *इण्टरनेशनल जर्नल आफ मैनेजमेण्ट स्टडीज*, वा0–2, इश्यु–1, जून, पृ0 27–35.
7. तनुश्री, एस0 (2015) ''ए स्टडी ऑफ दि प्रजेंट सचुएशन ऑफ दि ट्रेडिशनल हैण्डलूम वेवर्स ऑफ वाराणसी, उत्तर प्रदेश''. *इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज*, वा0–4, नं0–3, मार्च. पृ0 48–53.
8. बारी, आर0, मुनीर, ए0 एण्ड खान, टी0 आलम (2015), ''स्टेटस ऑफ हैंडलूम वर्कर्स इन संत कबीरनगर, यू0पी0 : ए केस स्टडी''. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रीसेंट साइंटिफिक रिसर्च*, वा0–6, इश्यू–12, दिसम्बर. पृ0 7798–7801.
9. सुल्तान, एफ0 मेहर एण्ड मेहरुन्निसा (2016), ''सोशियो–इकोनॉमिक कंडीशन ऑफ पावरलूम वेवर्स – ए केस स्टडी ऑफ मऊ सिटी'', *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटीज एण्ड सोशल साइंस इन्वेंशन*, वा0–5, इश्यू–11, नवम्बर. पृ0 31–36.